शहर के ईको सिस्टम बुढ़िया नाले पर भी दबंगों का कब्जा, अनंगपुर डैम पर बना दिए कमरे

शहर में पेयजल संकट और जलभराव के लिए सरकारी एजेंसियां ही नहीं जनता भी जिम्मेदार

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबादः एक खास समुदाय के दबंगों ने अरावली के जंगल काटकर, पहाड़ काटकर कब्जा तो किया ही लेकिन शहर के ईको सिस्टम को चलाने वाले बुढ़िया नाले को पाटकर उस पर भी कब्जा कर लिया। वहां कमरे बनाकर किराये पर चढ़ा दिए। इन दबंगों ने अपनी जमीनें सरकार को बेचकर मोटा मुआवजा पहले ही ले लिया है लेकिन अब राजनीतिक संरक्षण में सरकारी जमीनों पर खुले आम कब्जे कर रहे हैं। बुढ़िया नाले पर कब्जे के खिलाफ नगर निगम फरीदाबाद, सिंचाई विभाग, पुरातत्व विभाग, वन विभाग हरियाणा के अलावा हूडा चाहता तो समय रहते कार्रवाई कर सकता था लेकिन इन चारों एजेंसियों ने अवैध कब्जा करने वालों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। इन चारों का बुढिया नाले की जमीन में थोड़ा-थोड़ा हिस्सा है। पिछले हफ्ते आपने पढ़ा था कि किस तरह मेवला महाराजपुर और सेक्टर 45 के बीच में हूडा की जमीन पर नया खोरी बसा दी गई है। यहां पर दबंगों ने सैकड़ों क्वार्टर बना दिए हैं, जिनमें खोरी से उजाड़े गए लोगों ने किराये पर शरण ली है। बुढ़िया नाले पर दबंगों के कब्जे की यह खबर उस खबर की अगली कड़ी है।

अनंगपुर डैम पर मिट्टी डालकर इसे पाट दिया गया है और यहां कमरे बना दिये गये हैं।

शहर का ईको सिस्टम बर्बाद

मथुरा रोड से ग्रीन फील्ड जाते हुए अंडर पास के कोने से बुढ़िया नाला लगा हुआ है। बुढ़िया नाले में शहर के कई छोटे नाले और सीवर पाइप आकर निकलते हैं। अगर ये छोटे नाले और सीवर सिस्टम का पानी बुढ़िया नाले में आकर न गिरे तो शहर में जगह-जगह जलभराव का सामना करना पड़ेगा। विशेषकर ग्रीन फील्ड, सेक्टर 21 ए, बी, सी, डी, सेक्टर 45, 46, और मथुरा रोड के दूसरी तरफ डीएलएफ में भी जलभराव होगा। रविवार रात से शुरू हुई बारिश से शहर में जगह-जगह जलभराव की तस्वीरें आपकी नजर से गुजरी होंगी। सेक्टर 21 में पुलिस कमिश्नर का दफ्तर और घर सोमवार को टापू में बदल गया। सेक्टर 21 सी में नाले पर कब्जा करके लोगों ने पार्किंग बना ली है, कहीं-कहीं कैनोपी लगा दी है। ये नाले आगे जाकर बुढ़िया नाले में मिलते हैं। लेकिन जब नाले बीच में बंद हैं या पंक्चर हैं तो बारिश का पानी बुढ़िया नाले में पहुंच ही नहीं रहा है।

ग्रीन फील्ड को मथुरा रोड से जोड़ने वाले अंडरपास में मामूली बारिश में भी पानी भर जाता है। वजह यही है कि ग्रीनफील्ड के इस अंडरपास के आसपास बुढ़िया नाले को पाट दिया गया है। पानी को नाले में जाने की जगह मिल नहीं रही है। अंडरपास चूंकि नीचे है तो सारा पानी अंडरपास में भर जाता है या फिर लकड़पुर के रेलवे फाटक से लोग पार करने की कोशिश करते हैं। वहां कई बार जानलेवा हादसे हो चुके हैं। वहां से दोपहिया वाहन को गुजरने की अनुमति नहीं है लेकिन लोग क्या करें। अंडरपास से निकल नहीं सकते तो लकड़पुर का रेलवे फाटक सहारा बना हुआ है। मथुरा रोड से बुढ़िया नाले का जो हिस्सा छूता है, उस पर कुछ फैक्ट्री वालों ने कब्जा कर लिया है। फैक्ट्री वालों ने भी कब्जाई गई जमीन पर शेड बनाकर उसे किराये पर दे दिया है। आने वाले वक्त में बुढ़िया नाले का नामोनिशान अगर मिट जाएगा तो किसी को ताज्जुब नहीं होना चाहिए। फरीदाबाद में अरावली पहाड़, बुढ़िया नाला, आगरा और गुड़गांव कैनाल व चंद किलोमीटर के फासले पर बहने वाली यमुना फरीदाबाद का शानदार ईको सिस्टम बनाते हैं। लेकिन इनका हाल हमारे सामने है। आगरा और गुड़गांव कैनाल के किनारे भी कब्जे हो रहे हैं और नहर धीरे-धीरे सिकुड़ती जा रही है। अरावली में बड़े पैमाने पर जंगल साफ हो चुके हैं, पहाड़ काटकर फार्म हाउस, बैंक्वेट हॉल, होटल, आश्रम, मंदिर, यूनिवर्सिटी, स्कूल-कॉलेज बना दिए गए हैं। खोरी जैसे इलाके बसा दिए गए हैं। अब नतीजा हमारे सामने है। शहर में पेयजल संकट विकराल रूप लेता जा रहा है और दूसरी तरफ बारिश में सभी जगह पानी भर जाता है। कच्ची जमीन बची हो तभी पानी जमीन के अंदर जाएगा और अंडरग्राउंड वॉटर का लेवल बना रहेगा। इस तरह फरीदाबाद के लोग इस शहर के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दुश्मन बन चुके हैं।

32 नालों वाला शहर

बुढ़िया नाले के अलावा शहर में छोटे-बड़े मिलाकर 31 नाले और हैं। जिनमें रेलवे लाइन के साथ एसी नगर के किनारे बहने वाला नाला, गोंछी ड्रेन, सुभाष कॉलोनी का नाला आदि नालों में शहर के सीवर का पानी आता है। इसी तरह डबुआ की तरफ एयरफोर्स स्टेशन की तरफ जाने वाला नाला जो 60 फुट रोड नंगला के नाले से जुड़ा है, सिटी पार्क से महावीर कॉलोनी, बल्लभगढ़ से मोहना रोड की ओर जाने वाला नाला, मलेरना रोड का नाला, एनआईटी नंबर 2 में जाट धर्मशाला के सामने वाला नाला, नेहरू ग्राउंड का नाला भी इसमें शामिल है। लेकिन ये सभी 32 नाले कहीं न कहीं बंद पड़े हैं। हालांकि हरियाणा प्रदूषण नियंत्रण विभाग का कहना है कि औद्योगिक शहर फरीदाबाद में घर, सेक्टर और इंडस्ट्रीज से निकलने वाला इस्तेमाल किया हुआ पानी, सीवरेज आदि शहर के चार एसटीपी में शोधित किए जाने के बाद बुढ़िया नाले के जरिए यमुना नदी में छोड़ा जाता है। विभाग के आंकड़ों के अनुसार शहर का 90 फीसदी से अधिक सीवरेज, पानी तथाकथित शोधन के बाद बुढ़िया नाले से यमुना नदी में डाला जाता है। बाकी दस फीसदी पानी नदी के किनारे बसे गांवों, अनियमित क्षेत्र की फैक्ट्रियों आदि से शोधित या अशोधित पानी छोड़ा जाता है। लेकिन प्रदूषण नियंत्रण विभाग की यह रिपोर्ट सिर्फ कागजों में है। प्रदूषण नियंत्रण विभाग ने कई साल पहले बुढ़िया नाले के पानी का सैंपल तक लिया था लेकिन उस सैंपल की रिपोर्ट क्या रही और उस पर कितनी कार्रवाई हुई, यह कोई नहीं जानता।

हकीकत में इंडस्ट्रीज से छोड़ा जाने वाला पानी तो कई बार सड़क पर ही फैल जाता है। इसका सबसे सटीक उदाहरण मथुरा रोड पर शाही फैक्ट्री है। जिसका पानी सड़कों पर फैलने और सीवर के जरिए सेक्टर 28 हाउसिंग बोर्ड के घरों में घुसने की खबर जब-तब मिलती रहती है। इसी तरह मथुरा रोड के किनारे तमाम डाइंग और गारमेंट कंपनियां भी कई बार प्रदूषित पानी सड़कों पर छोड़ देती हैं।

कहां-कहां कब्जे

शहर के ईको सिस्टम के लिए महत्वपूर्ण बुढ़िया नाले में बहुत पहले प्राकृतिक रूप से अरावली पहाड़ से पानी आता था। शहर के कई छोटे नालों को बुढ़िया नाले में लाकर मिलाया जाना था। लेकिन यह प्रोजेक्ट सरकारी फाइलों में कहीं धूल चाट रहा है। कुछ ही नाले आ सके लेकिन बाकी नाले नहीं आ सके। लेकिन अफसोस यह है कि पिछले सात वर्षों में बुढ़िया नाले को पाटने की जो साजिश राजनीतिक लोगों ने की है, वह बहुत ही शर्मनाक है। ग्रीन फील्ड और सेक्टर 45 के बीच बुढ़िया नाले को छूने वाली जमीन पर फिलिंग कराकर प्लॉट बना दिए गए। फिर इन पर मकान बन गए। लकड़पुर से आ रहा नाला भी बुढ़िया नाले में मिलता है। लकड़पुर नाला पीछे सेक्टर 21 और 45, 46 से जुड़ा हुआ है। लेकिन लकड़पुर नाले को ही पाट दिया गया है। यहां खास समुदाय के दबंगों ने मकान और दुकानें बना दी हैं। बहुत पुरातन अनंगपुर डैम के आसपास भी अवैध कब्जे हो चुके हैं। कुछ हिस्से पर अभी भी कमरे बनाने का काम जारी है। इस तरह तीन तरफ से बुढ़िया नाले का रास्ता बंद हो चुका है। अनंगपुर डैप पर जिन दबंगों ने कब्जा किया है, उनका संबंध एक केंद्रीय मंत्री से है। वे लोग उसके रिश्तेदार बताये जाते हैं।

बुढ़िया नाला एक पुरातात्विक धरोहर है लेकिन हरियाणा का पुरातत्व विभाग इसे मामूली नाला मानकर इस तरफ झांकता तक नहीं है। हालांकि बुढिया नाले पर नीचे की तरफ लखौरिया ईंटों से बनाया गया पुल काफी समय तक वजूद में रहा लेकिन बाद में इसे तोड़कर इस जगह को समतल कर दिया गया। पुरातत्व विभाग चाहता तो वहां दखल देकर उसे संरक्षित करा सकता था। लेकिन पुरातत्व विभाग ने कभी सरोकार रखा ही नहीं। अरावली तक में पुरातत्व महत्व की चीजें बिखरी हुई हैं लेकिन विभाग उनकी तरफ भी ध्यान नहीं दे रहा है।

बाटा चौक के नाले पर शोरूम

शहर के एनआईटी इलाके में बाटा चौक से गुजरने वाले नाले पर शोरूम खड़े कर दिए गए। एमसीएफ के अफ़सर इन्हें बनता हुआ देखते रहे लेकिन किया कुछ नहीं। हालाँकि जेएनयूआरएम के तहत एमसीएफ ने इन नालों की सफ़ाई पर कई करोड़ रूपये खर्च किए लेकिन वो पैसे भी नाले में बह गए। ऐसा नहीं कि शहर के जागरूक नागरिक ऐसे मामलों को नहीं उठाते। बाटा चौक के नाले का मामला आरटीआई एक्टिविस्ट के.एल. गेरा उठा चुके हैं। हाईकोर्ट में उनकी याचिका (सीडब्ल्यूपी 13508/2006) पर अभी फ़ैसला नहीं आया है। शहर के लगभग तमाम अवैध निर्माण के मामलों को गेरा अदालत में उठा चुके हैं।

फरीदाबाद में गुंडों ने फैलाई अराजकता, मीडिया के दबाव पर केस दर्ज

सतिंदर दुग्गल के बाद प्रणव वधावन पर हमला, पंजाबियों को दी गालियां

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबादः शहर में गुंडों की अराजकता बढ़ रही है। कोर्ट परिसर के पास जाने-माने एडवोकेट सतिंदर दुग्गल पर हमले का मामला अभी ठंडा भी नहीं हुआ था कि कुछ गुंडों ने 17 जुलाई को सेक्टर 28 पुलिस चौकी में सेक्टर 28 के ही रहने वाले प्रणव वधावन पर जानलेवा हमला किया। पुलिस चौकी इंचार्ज ने घायल प्रणव को इलाज के लिए सेक्टर 19 के अस्पताल में भर्ती कराया। सर्वोदय अस्पताल सेक्टर 19 में डॉक्टरों ने प्रणव को लगी चोट को बहुत कम करके लिखा, क्योंकि उनके पास ऊपर से फोन आ गया था। पुलिस ने घटना के बाद दो दिन तक एफआईआर नहीं लिखी। लेकिन जब मीडिया में खबरें आने लगीं और गोदी मीडिया को भी इस खबर को छापना पड़ा तब पुलिस हरकत में आई और उसने सेक्टर 28 पुलिस चौकी में अमर चौधरी, पार्षद पति रवि भड़ाना, राहुल भाटी और राजू पंडित के खिलाफ केस दर्ज किया। इनमें मुख्य आरोपी अमर चौधरी केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर का भांजा है, जबकि उसके पिछलग्गू हैं।

पंजाबियों को गाली दी, गूजर के भांजे ने रॉड मारी

प्रणव वधावन ने मीडिया को बताया कि वह एक कार शोरूम में सेल्स मैनेजर है। गाड़ी खरीदने के सिलसिले में अमर चौधरी से उसकी अच्छी जान पहचान थी। प्रणव के मुताबिक 16 जुलाई को अमर चौधरी के साथ उसकी फोन पर कुछ गलतफहमी हो गई थी। न मैंने उन्हें कभी गाली दी और न ही कोई गलत शब्द इस्तेमाल किया। अलबत्ता इन लोगों ने पंजाबियों को गाली देते हुए पाकिस्तान भेजने की बात कही। फिर अमर चौधरी ने मुझे जान से मारने की धमकी दी और मेरे खिलाफ पुलिस चौकी सेक्टर-28 में फर्जी शिकायत की।

उसके बाद 17 जुलाई को मुझे चौकी प्रभारी का कॉल आया और उन्होंने चौकी में बुला लिया। मैं आधा घंटा इंतजार करने के बाद घर चला गया और घर आते ही मुझे चौकी प्रभारी ने फिर से कॉल किया और चौकी बुलाया, जैसे ही मैं चौकी आया तो अमर चौधरी, रवि भड़ाना,राहुल भाटी, राजू पंडित व अन्य लड़कों ने चौकी के अंदर ही मुझे पुलिस वालों के सामने मारना शुरू कर दिया। उन्होंने पुलिस के डंडों से मुझे पीटा। फिर अमर चौधरी ने मेरे सिर पर काफ़ी बार रॉड मारी जिससे मेरा सिर फट गया। प्रणव के मुताबिक चौकी प्रभारी और बाकी पुलिस वालों ने उसे बचाने की नकली कोशिश की। जब मैं बेहोश हो गया तो मुझे मरा समझकर वहां से भाग निकले। इसके बाद चौकी इंचार्ज ने मुझे सर्वोदय अस्पताल सेक्टर 19 में भर्ती कराया। लेकिन वहां भी डॉक्टर ने ऊपरी दबाव पर चोट बहुत हल्की लिखी। इतना ही नहीं इस वारदात के असली गुनहगार चौकी इंचार्ज के खिलाफ कोई भी कार्रवाई नहीं की गयी। जबकि वह इस वारदात की कथित साजिश में पूरी तरह शामिल था।

ग्रेफा निवासियों ने पुलिस कमिश्नर का दरवाजा खटखटाया

ग्रेटर फरीदाबाद में भी गुंडों और दबंगों की वजह से दहशत अभी कायम है। 18 जुलाई को ग्रेफा कन्फैडरेशन आफ आरडब्ल्यूएज के पदाधिकारियों ने पुलिस कमिश्नर ओ.पी. सिंह के कैंप आफिस जाकर ज्ञापन देने की कोशिश की। पुलिस कमिश्नर उस दिन व्यस्त थे लेकिन वह घर लौटे तो ग्रेफा का प्रतिनिधिमंडल उनके कैंप आफिस पर मौजूद थे। पुलिस कमिश्नर के दफ्तर ने बताया कि आज छुट्टी का दिन है। साहब से आज मुलाकात नहीं हो सकती है। आप लोग सोमवार को आइए। जबकि पुलिस कमिश्नर उस दिन सुबह से मुख्यमंत्री के साथ व्यस्त थे लेकिन मुख्यमंत्री के जाते ही वह कैंप आफिस आ गए थे और चाहते तो ग्रेटर फरीदाबाद से आए लोगों से मिल सकते थे।

कन्फैडरेशन से जुड़े नेताओं निर्मल कुलश्रेष्ण और रेणु खट्टर ने कहा कि सच बोलने वालों पर नहरपार जिस तरह हमले बढ़ रहे हैं, वह बहुत चिन्तनीय है। इसमें एक पैटर्न सा दिखाई दे रहा है। रेणु खट्टर ने पिछली घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि जिसने भी तमाम सोसाइटियों में सक्रिय दबंगों और गुंडों के खिलाफ आवाज उठाई, उसको पीटा गया। रिटायर्ड विंग कमांडर और एडवोकेट सतिंदर दुग्गल पर हुआ ताजा हमला उसी सिलसिले की कड़ी है। नहर पार बीपीटीपी थाने की पुलिस और खेड़ी पुल थाना की पुलिस सोसाइटी के लोगों की सुनने की बजाय दबंगों और गुंडों को प्रोत्साहित करती है। ऐसे में हमारे पास यही चारा है कि हम भी सड़क पर आकर अपनी बात कहें।

बता दें कि 15 जुलाई को एडवोकेट सतिंदर दुग्गल पर उस समय हमला हुआ था जब वो एनॉन सिक्योरिटी केस की सुनवाई से लौट रहे थे। इस मामले में पुलिस ने नवीन चेची और उसके दो साथियों नवीन चितकारा और खटाना के खिलाफ केस दर्ज किया था।

एनॉन सिक्योरिटी को झटकाः नहरपार ओजोन पार्क सोसाइटी में एनॉन सिक्योरिटी लगी हुई थी, जिसे आरडब्ल्यूए की इच्छाओं के विपरीत लगाया गया था। इसका मालिक सिक्योरिटी हटाने के खिलाफ कोर्ट से स्टे ले आया था। आरडब्ल्यूए के वकील होने के नाते सतिंदर दुग्गल इस केस की पैरवी कर रहे थे। इसी वजह से उन पर गुंडों ने हमला किया और पुलिस के मुताबिक इसमें मुख्य साजिशकर्ता के रूप में नवीन चेची का नाम आया है। बहरहाल, अब जिला अदालत ने भी इस केस में 20 जुलाई को अपना फैसला सुना दिया है। कोर्ट ने एनॉन सिक्योरिटी की याचिका को खारिज कर दिया है और ओजोन पार्क सोसाइटी के स्टैंड को सही ठहराया है।

देखी-सुनी

खबरीलाल

मक्कार अधिकारी, बेबस जनता

फ़रीदाबाद में इस समय कुछ ऐसे अफ़सर आ गए हैं जो अपने कैंप ऑफिस में विधायक और जनता से मिलने में तो परहेज़ करते हैं लेकिन फ़्रॉड बाबा लोगों, पैसे वालों, दलालों, रसूख़दार नेताओं और तस्करों के लिए उनके घर के ड्राइंग रूम तक के दरवाज़े खुल जाते हैं। कुछ वीडियो कॉन्फ़्रेंसिंग के ज़रिए मिलते हैं। हाल ही में एक प्रतिनिधिमंडल एक आला अफ़सर के कैंप आफिस मिलने गया। अफ़सर ने पूरी धूर्तता के साथ अपने एक कर्मचारी को उस प्रतिनिधिमंडल के पास उनकी फ़रियाद सुनने भेज दिया, लेकिन लोकतंत्र का सम्मान करते हुए, वो अफसर प्रतिनिधिमंडल से मिलने नहीं आया। कुछ देर बाद एक विधायक पहुँचा, उसे भी वापस भेज दिया गया। संयोग से खबरीलाल वहाँ मौजूद था। प्रतिनिधिमंडल के जाने के बाद एक फ्रॉड बाबा को फ़ौरन उस अफ़सर के ड्राइंगरूम तक ससम्मान ले ज़ाया गया। यह बाबा करनाल से आया था। इसकी आरएसएस में पहुँच है और कुछ तंत्र मंत्र भी जानता है तो अफ़सर ने उससे खुद भी मिलने से परहेज़ नहीं किया। जाहिर है अफसरों को अब जनता, जनप्रतिनिधियों, लोकतंत्र, संविधान की परवाह नहीं है। उन्हें बस अपनी नौकरी बचाने, अच्छा पद पाने के लिए दलालों को महत्व देना ही याद रहता है। अभी जब मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर दो दिन के लिए फरीदाबाद थे तो यहां का हर अफसर खट्टर के नजदीकी लोगों के संपर्क में था ताकि उसकी शिकायत सीएम तक नहीं पहुंचे।

सीमा त्रिखा का आखिरी दांव

मुख्यमंत्री 17 और 18 जुलाई को फ़रीदाबाद में थे। 17 जुलाई की रात उन्होंने सूरजकुंड के होटल में बिताई। इस दौरान उन्होंने विधायकों से मंत्रणा की। बातचीत के दौरान उन्होंने मंत्रिमंडल विस्तार का संकेत दिया। इसके बाद तो पार्टी संगठन के नेताओं की दरी उठाने वाले नरेंद्र गुप्ता भी अपने आपको भावी मंत्री मान बैठे और अपने-अपने चंपुओं में सूचना फैलाने का निर्देश दिया। अब शहर में हर विधायक के चमचों ने अपने नेता को मंत्री पद पर बैठा दिया है। लेकिन इसमें अगर किसी का मामला पूरी गंभीरता से आगे बढ़ रहा है तो वो हैं सीमा त्रिखा। सीमा सीएम खट्टर के बहुत नज़दीकी लोगों में हैं। खट्टर उन्हें मंत्री बनाना भी चाहते हैं लेकिन आरएसएस से इसकी अनुमति नहीं मिल रही है। सीमा इस बात को अच्छी तरह समझ चुकी हैं कि यह उनका आखिरी चुनाव साबित हो सकता है। क्योंकि आरएसएस ने एक पूरी लॉबी टिकट के नए दावेदारों की खड़ी कर दी है। संघ और भाजपा में अब पैसे वालों का ही बोलबाला है और बडखल विधानसभा से अगला टिकट किसी उद्योगपति को मिल सकता है। इसके लिए दो प्रमुख दावेदार खड़े किए जा रहे हैं। ये हैं - फ़रीदाबाद इंडस्ट्रीज़ एसोसिएशन के अध्यक्ष बी. आर. भाटिया और एसएसबी अस्पताल के मालिक डॉ एसएस बंसल। सीमा मंत्री पद मिलने के बाद अपने क्षेत्र में काम करके टिकट पर अपना दावा मज़बूत करना चाहती हैं। खट्टर को भी पता है कि अगली बार सिर्फ़ सीमा ही नहीं, उनका भी टिकट कटने वाला है, इसलिए वो भी सीमा को मंत्री बनवाना चाहते हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06